वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 121	Year 15	Volume 05	December 2023 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

How one looks at death depends upon his spiritual upliftment

Given a choice; majority of humans will not like to embrace death even when life becomes a curse for them. This anecdote proves this truism-- there was a stampede in the Kumbh gathering in Haridwar. An elephant belonging to a group of sadhus went berserk and started running towards the crowd. Seeing the elephant rushing towards them, people also started running to save their lives. The one who was ahead of everyone was a leper in an advanced stage, whose sight could horrify others. In a tizzy, an onlooker with a philosophical bent thinks to himself — what is in his life, for which he is running to save himself from the clutches of death?

The truism that dawned on me was that nobody wants to die and wants to live as long as the creator of this Universe permits. A decrepit, bedridden old man, in the grip of various ailments, and living on external life aids, may be in fathomless agony, but if asked, maximum chances are that he may show his intent to live as long as possible.

The second anecdote relates to a young fisherman who would daily go to a particular spot on the sea shore to catch fish. A wealthy person, during his daily walk, would enjoy seeing him in action. One day as the

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2022-2024

fisherman came out, he asked him out of curiosity, "Is your father also in the same profession?" "Of course, he was but one big fish swallowed him when he was deep inside" It was followed by another enquiry, "What about your brother and uncle" "They were swept away by the high tides of the sea " Somewhat perplexed by the fisherman's reply, that person asked him about his grandfather. "I am told that he also met the watery grave in the same sea " replied the fisherman.

Completely flummoxed, that man kept on looking at the fisherman's face which betrayed no emotions. After a while he said, " Young man, this sea has been the cause of all the deaths in your family and still you are continuing to explore in the same sea. Why don't you do something else, I can help you."

Fisherman was in splits. After a while, he asked that man " What is your father doing? "He is no more, he died of cardiac arrest at a young age" replied that man.

"Look, your father didn't come to this sea but still death had its way and I can presume that none of your other kin, who are no more, had died in this sea or because of this sea. What I really want to convey is that death is inevitable. When any person's days on this planet are finished, death will not spare him whether he is in the sea or on the earth or even in the air in an aeroplane. So why to think of death. Keep on doing your work." fisherman sermonized like a sage.

Lord Krishna in Geeta has said two things which if followed can take away the fear of death. First, it is the body that ceases to function but the soul is immortal. After death the soul is reborn in another body and it is like throwing away the worn out clothes and wearing the new ones. Life is a continuous stream of births and deaths until one by upasana , communion with God, achieves moksha.

Bhartendu Sood

अपनी आत्मा की आवाज़ के विरुद्ध आचरण करने वाले राक्षस हैं - यजुर्वेद

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का तीसरा मन्त्र है -

असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः ।

तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के च आत्महनो जनाः ।।

अर्थ – जो लोग अपनी आत्मा का हनन करते हैं अर्थात मन में और, वाणी में और तथा करते कुछ और हैं वे राक्षस हैं, अज्ञान अन्धकार में फंसे हुए हैं। मरने के बाद भी वे गहरे अन्धकारमय जीवन को पाते हैं।

आत्मा की पवित्रता का नाम ही अध्यात्मवाद है और परमात्मा को पाने के लिए आत्मा की पवित्रता का होना परम आवश्यक है। बाहरी दिखावा तो कोरा आडम्बर और पाखण्ड है। यह ब्रह्माण्ड ईश्वर की व्यवस्था से ही चल रहा है। उपरोक्त वेदमन्त्र ईश्वर की व्यवस्था का ही वर्णन कर रहा है। जो व्यक्ति अपनी आत्मा की आवाज के विरुद्ध आचरण करता है वह अपना वर्तमान और भविष्य दोनों को बिगाड़ता है। जो लोग अपनी धौंस से दूसरों की आत्मा की आवाज को दबाते हैं उनके राक्षसपन की सीमा का तो कहना ही क्या।

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Remembrance

SHARDA DEVI SOOD

1930 - 1990

Oh Mother! I continue to feel protected by your love and affection, though 33 years have passed since you left.

Bhartendu Sood and Family.
Kamdhenu Jal Shimla,
Mobile: 9217970381, 9465680687

आप भी अपने परिवार के सदस्यों के स्मरण (Remebrance) दे सकते है।
रू.२००/-
for quarter page with photo
9217970381
9465680686

शिमला का कामधेनु जल **SHARDA**

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए एक असरदार व अदभुत आयुर्वैदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

Marketing Off ... 231 Sector 45-A, Chandigarh 16004

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9465680686 या Paytm No. 9465680686

ईश्वर की न्याय व्यवस्था से मनुष्य कभी बच नहीं सकता - अथर्ववेद

कृष्णचन्द्र गर्ग

1. अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। (अथर्ववेद 10–8–32)

अर्थ – ईश्वर हम सबके अन्दर विद्यमान है। कोई भी प्राणी उससे कभी भी अलग नहीं हो सकता और न ही उसे आँखों से देख सकता है। ऐ मनुष्य! उसे जानने के लिए तू वेदों में दिए उसके ज्ञान को प्राप्त कर जो न कभी मरता है और न ही कभी पुराना होता है।

2. यः तिष्ठति चरति यः च वष्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम्।
द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः।। (अथर्ववेद 4–16–2)

अर्थ – चाहे कोई मनुष्य ठहरा हुआ है या चल रहा है, चाहे कोई किसी को ठग रहा है, चाहे कोई किसी के पीछे छिप कर षडयन्त्र रच रहा है, बेशक कोई दो मनुष्य कहीं एकान्त में किसी विषय पर गुप्त चर्चा कर रहे हैं, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी परमेश्वर तीसरा वहां उपस्थित रहता हुआ सब कुछ जान लेता है।

3. न किल्बिषम् अत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशाति।। (अथर्ववेद 12–3–48)

अर्थ – अच्छे, बुरे कर्म के फल में किसी भी क्रियाकाण्ड से कोई कमी नहीं आती, न किसी की सिफारिश चलती है और न ही कोई मित्र, साथी या सम्बन्धी कर्मफल का हिस्सा ले सकता है। जिसका कर्म है उसका फल उसे ही मिलता है और जितना है उतना ही मिलता है, कम या अधिक नहीं।

4. त्वं स्त्री त्वं पुमान् असि त्वं कुमार उत वा कुमारी।
त्वं जीर्णो दण्डेन वष्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः।। (अथर्ववेद 10–8–27)

अर्थ – हे जीव! कभी तू स्त्री के शरीर में जाकर स्त्री कहलाता है, कभी पुरुष, कभी लड़का और कभी लड़की के शरीर में जाकर पुरुष, लड़का और लड़की कहलाता है। कभी तू बूढ़े शरीर में लाठी के सहारे चलता है। इस प्रकार तू अनेक शरीर धारण करता है।

5. उत एषां पिता उत वा पुत्र एषां उत एषां ज्येष्ठ उत वा कनिष्ठः।
एको ह देवो मनसि प्रविष्टः प्रथमो जातः स उ गर्भे अन्तः।। (अथर्ववेद 10–8–28)

अर्थ – जीवात्मा कभी तो बालकों का पिता बनता है और कभी वह इनका पुत्र बन जाता है। वह भाईयों में कभी बड़ा भाई बन जाता है और कभी छोटा भाई बन जाता है। एक एक जीव एक एक मन में रहता है। यह जीव अलग–अलग गर्भों में आता रहता है।

6. सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः। (अथर्ववेद 12–1–10) का अंश

अर्थ – जिस प्रकार माता अपनी सन्तान को दूध पिलाती है उसी प्रकार यह पृथ्वी हम सबको खाने–पीने की वस्तुएं प्रदान करती है।

7. माता भूमिः पुत्रो अंह पृथिव्याः। पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।।
(अथर्ववेद 12–1–13) का अंश

अर्थ – भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ। बादल पिता है, वह हम सबका पालन करे।

0172-4010679

संक्षिप्त सत्यार्थप्रकाश

प्रथम समुल्लास

कृष्णचन्द्र गर्ग

ईश्वर नाम विषय

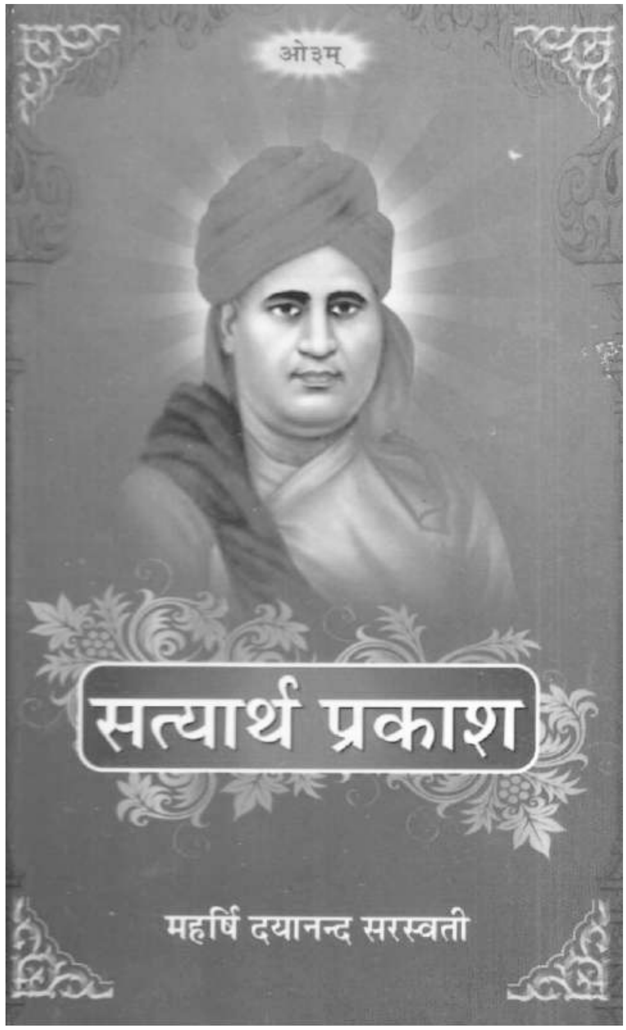

(ओ३म्) यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे – अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं। जहाँ जिसका प्रकरण है वहाँ उसी का ग्रहण करना योग्य है जैसे किसी ने किसी से कहा कि 'हे भृत्य! त्वं सैन्धवमानय' अर्थात तू सैन्धव को ले आ। तब उसको समय अर्थात प्रकरण का विचार करना अवश्य है, क्योंकि सैन्धव नाम दो पदार्थों का है, एक घोड़े और दूसरा लवण का। जो स्वस्वामी का गमनसमय हो तो घोड़े और भोजन का काल हो तो लवण को ले आना उचित है।

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत्।। २ ।। छान्दोग्य उपनिषत्। ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम्।। ३।। माण्डूक्य। सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्।।४।। कठोपनिषद् वल्ली २। मं0 १५।

(ओ३म्) जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता उसी की उपासना करनी योग्य है अन्य की नहीं।।

2।। (ओमित्येत0) सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्मवर का प्रधान और निज नाम (ओ३म्) को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम हैं।।

3।। (सर्ववेदा0) क्योंकि सब वेद, सब धर्मानुष्ठानरूप तपश्चरण जिसका कथन और मान्य करते और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्य्याश्रम करते हैं उसका नाम 'ओम्' है।।

4 ।। परमात्मा के बहुत से गुणों के कारण बहुत नाम है। अग्नि – प्रकाश स्वरूप मनु – विज्ञान स्वरूप प्रजापति – सब का पालन करने वाला

यह सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री कृण चन्द्र गर्ग की पुस्तक 'संक्षिप्त सत्यार्थप्रकाश'' से लिया गया है

0172-4010679

यादों के दुखद प्रभाव से बचने के लिए आवष्यक है यादों के पैटर्न को बदलना

सीताराम गुप्ता

पाओलो कोएल्हो ने लिखा है कि यादें नमक की तरह होती हैं। खाने में नमक सही मात्रा में हो तो खाने का स्वाद बढ़ जाता है और यदि अधिक हो जाए तो खाने का सत्यानाष हो जाता है। यादों के विशय में भी एक दम सटीक बात है ये। हमें हर वक़्त अतीत की यादों में ही नहीं डूबे रहना चाहिए। अतीत को लेकर हर समय परेषान नहीं रहना चाहिए। अहमद 'फ़राज़' साहब का एक षेर याद आ रहा है :

भूल जाना भी तो एक तरह की नेमत है 'फ़राज़',
वरना इंसान को पागल न बना दें यादें।

कुछ चीज़ें भूल जाने में ही हमारी भलाई होती है अन्यथा कुछ यादें इतनी कड़वी अथवा दर्दनाक होती हैं कि हमारा मानसिक संतुलन बिगाड़ दें। हमें चाहिए कि हम केवल ज़रूरी चीज़ों को ही याद रखें हर बात को नहीं। साथ ही हम सुखद घटनाओं को याद रखें व दुखद घटनाओं को भूलने का प्रयास करें। लेकिन वास्तविक जीवन में इसका उलट होता है। यदि हम इस पैटर्न को बदल दें तो जीवन अपेक्षाकृत अधिक आनंददायक हो जाए।

एक चुटकुला याद आ रहा है। एक व्यक्ति उदास बैठा था। उसके दोस्त ने पूछा कि भई इतने अधिक उदास क्यों दिखलाई पड़ रहे हो? व्यक्ति ने जवाब दिया कि मैं अपनी उस प्रेमिका को भूलने की कोषिष कर रहा हूँ जिसने मुझे धोखा देकर मेरा जीवन बर्बाद कर दिया। दोस्त ने कहा कि फिर भूल जाओ उसे और ख़ुष रहने की कोषिष करो। व्यक्ति ने कहा कि भूलूँ कैसे? उसका नाम ही याद नहीं आ रहा है। हम वास्तव में अपनी यादों के ज़रिए अपने ज़ख़्मों को कुरेदते रहने में माहिर होते हैं। हम अपने बुरे अनुभवों को भूलने की बजाय उनकी पीड़ा में आनंद लेने का प्रयास करते हैं। यादों के विशय में हमें अपनी मानसिकता में बदलाव लाना चाहिए ताकि उनका दुश्प्रभाव हम पर अधिक न हो।

यादों के संबंध में सबसे भयानक बात ये है कि हम बुरी यादों को भूलने की बजाय उन्हें बार–बार दोहराते रहते हैं। उन्हें ताज़ा करते रहते हैं। घाव भरने को होता है तो फिर कुरेद देते हैं। जीवन में भावनात्मक संतुलन बहुत ज़रूरी है। भावनात्मक संतुलन व जीवन में प्रसन्नता के लिए ज़रूरी है कि हम बुरे अनुभवों से उत्पन्न यादों को भूल जाएँ व अच्छी यादों को मन में सँजोए रखें लेकिन ऐसा हो नहीं पाता। प्रायः अच्छी आदतें क्षणिक होती हैं व बुरी यादें देर तक बनी रहती हैं। अच्छी यादें कम होती हैं, बुरी यादें अधिक। यादों के संबंध में हमें अपनी मानसिकता में परिवर्तन करना चाहिए। यदि हम अच्छी व बुरी यादों के इस क्रम को बदल दें तो जीवन अपेक्षाकृत अधिक आनंददायक हो जाए।

कुछ लोग कहते हैं कि उनका जीवन बड़ी अच्छी यादों से भरा है तो कुछ कहते हैं कि उनका जीवन बड़ी बुरी यादों से भरा है। वास्तव में अधिकांष यादें कभी अच्छी या बुरी नहीं होती। हमारे जीवन के अनुभव उन्हें अच्छी या बुरी बनाते हैं। हमारे अनुभवों को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है : अच्छे अनुभव और बुरे अनुभव। जब अच्छे या सुखद अनुभव

स्मृति में आते हैं तो स्वाभाविक रूप से अच्छा लगता है, सुखद प्रतीत होता है। जब बुरे अनुभव स्मृति में आते हैं तो दुखद प्रतीत होते हैं। कुछ लोग इसके विपरीत विचार भी रखते हैं। कुछ का कहना है कि जीवन की मधुर यादें दुखी करती हैं। वे बेचैन कर देती हैं, वर्तमान में पीड़ा भर देती हैं।

बच्चन जी ने निषा–निमंत्रण की एक कविता में लिखा है कि याद सुखों की आँसू लाती, दुख की, दिल भारी कर जाती। और भी कई विद्वानों ने कहा है कि बीते हुए कल के अच्छे अनुभव वर्तमान को दुखपूर्ण बना देते हैं। वास्तव में अतीत की मधुर यादें पीड़ा नहीं पहुँचातीं अपितु हम उन मधुर यादों की संबंधित कटु यादों के साथ तुलना करके उन्हें कश्टप्रद बना डालते हैं। मेरा अपना अनुभव है कि जब मेरे जीवन के सुखद अनुभव मेरी स्मृति में आते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब मन में कोई दुखद घटना आ जाए तो फौरन किसी सुखद घटना पर ध्यान ले जाने का प्रयास करना चाहिए। इससे दुखद घटना की याद से होने वाली पीड़ा से बच जाएँगे।

फिलहाल हम अच्छी यादें उन्हें मान लेते हैं जिन्हें वर्तमान में याद करने से सुख मिलता है अथवा अच्छा लगता है। जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जो हमें जीवनभर आनंद देते रहते हैं। हमारी उपलब्धियाँ, सफलताएँ और मधुर संबंधों के अनुभव ऐसी सुखद यादों का आधार बन सकते हैं। ऐसे क्षणों को याद करना किसे अच्छा नहीं लगेगा? अच्छी यादें हमें दुखी कैसे कर सकती हैं? दूसरी ओर बुरी यादें उन्हें मान लेते हैं जिन्हें वर्तमान में याद करने पर सचमुच दुख होता है। जीवन में लगातार असफलताएँ, प्रिय व्यक्तियों से बिछुड़ना, कुछ लोगों द्वारा बेवजह अपमान अथवा धोखा देने की घटनाएँ ऐसी दुखभरी यादें हो सकती हैं जिन्हें याद करके दुख हो सकता है। बुरी यादें तो निष्चित रूप से दुख पहुँचाती हैं लेकिन यदि अच्छी यादें भी दुख पहुँचाएँगी तो फिर आदमी कैसे जी सकेगा?

अच्छी यादें हमें भावुक बना सकती हैं, हमारी आँखों में आँसू ला सकती हैं लेकिन हमें दुख नहीं पहुँचा सकतीं। कभी बहुत अच्छे दिन देखे थे। आज वो बात नहीं है। तो क्या अच्छे दिनों को याद करके रोएँ? आज की बिगड़ी स्थिति को देखकर भी रोएँ और अच्छे दिनों को याद करके भी रोएँ, ये तो कोई बात नहीं हुई। हमें अतीत के सुखद अनुभवों पर विलाप करना छोड़ना चाहिए। यदि हमने किसी के साथ बहुत अच्छा समय व्यतीत किया है लेकिन दुर्भाग्य से यदि वो चिरस्थायी न हो सका तो हमें अपना ध्यान बिछोह की अपेक्षा सुखद पलों पर केंद्रित करना चाहिए और उसे एक उपलब्धि मानकर वर्तमान में प्रसन्नता का अनुभव करना चाहिए। कुछ यादें इतनी भयानक व पीड़ादायक होती हैं कि उनके याद आते ही हमारा तन सुलगने लगता है। उन यादों से बचना चाहिए।

बुरी यादों से मन कटुता से भर उठता है। हम तनाव में आ जाते हैं। कई बार अनायास मुँह से षब्द निकलने लग पड़ते हैं। क्रोधाधिक्य में मुट्ठियाँ तन जाती हैं। कुछ ग़लत करने को व्यग्र हो उठते हैं। ऐसी स्थिति का बार–बार होना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक है। इससे मानसिक व षारीरिक व्याधियों के होने का ख़तरा बढ़ जाता है। हमें ऐसी भयानक यादों के बारे में अपनी मानसिकता में परिवर्तन करना चाहिए। हर बुरी याद भी उतनी बुरी नहीं होती जितनी बुरी हम मान बैठते हैं। हर बुरी घटना या दुर्घटना अथवा समस्या हमारे जीवन में नए अवसरों को लेकर आती है। यदि वह दुःस्वप्न नहीं घटित हुआ होता तो संभव है हम जीवन में नए अथवा बेहतर तरीक़े से नहीं साचते या कुछ नया नहीं करते। हमें ये सोचकर भी सामान्य होने का प्रयास करना चाहिए कि कम से कम वर्तमान में तो हम उस स्थिति में नहीं हैं।

दूसरे सुख–दुख अथवा अच्छे–बुरे दोनों तरह के अनुभव जीवन का स्वाभाविक क्रम है। हर बुरे अनुभव से निकलने के बाद हम बहुत अच्छा अनुभव करते हैं। जीवन में जो आनंद या प्रसन्नता मिलती है वो केवल दुखों के कम होने से ही मिलती है। दुख नहीं तो प्रसन्नता नहीं। बुरी यादों का अर्थ है कि वो घटनाएँ बीत चुकी हैं। हमें सर्वाधिक बुरी घटनाएँ ही याद रहती है उनके मुकाबले में कम बुरी घटनाएँ कभी याद नहीं रहतीं। सर्वाधिक बुरी घटनाओं के बीतने पर प्रसन्नता अवष्य हुई होगी। बुरी घटना के बजाय उसके बाद प्राप्त प्रसन्नता पर ही पूरा ध्यान केंद्रित कीजिए। बुरी यादों के दुश्प्रभाव से बचने का ये एक कारगर उपाय हो सकता है लेकिन तभी जब हम अपनी यादों के प्रति अपनी मानसिकता को बदल लें।

The Sage who dispelled ignorance

Bhartendu Sood

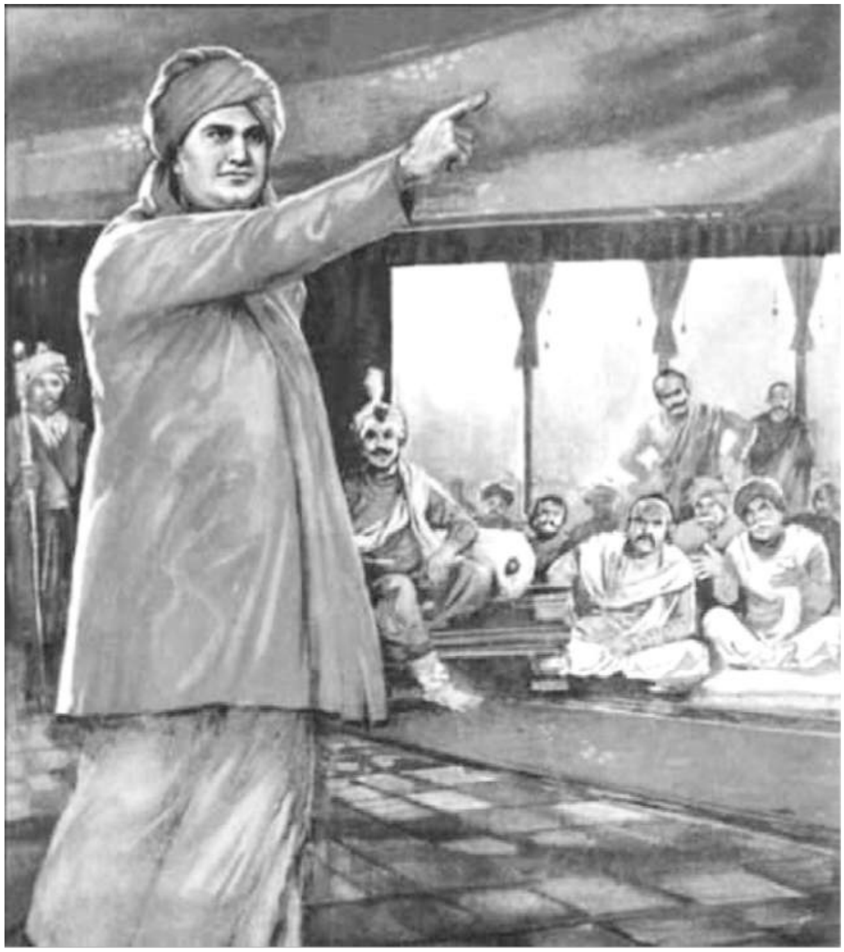

Swami Dayanand, whose 200th birth centenary is being observed, had launched a relentless crusade against against beliefs which were opposed to Vedic teachings and were primarily responsible for India's decantation. This created many enemies, and repeated attacks were done on his life.

It was the 17th time when he was poisoned. Lying on his bed in his temporary abode at Ajmer, Dayanand had come to realise that his end was near, but' he was at peace with himself and did not betray any feeling of anguish or agony.

He did not anoint any successor because he did not want that any sect started in his name and people start worshipping him. A true yogi, he had the power to time his death. On Diwali day, he gave up his mortal body.

His devotees assembled at different places.

Knowing that the Maharishi's mission was to remove ignorance, superstitious beliefs and other social evils, a decision was taken to establish schools in all parts of the country to impart education by upholding the values and teachings of the Vedas.

While Lala Lajpat Rai, Lala Hans Raj and Guru Datt Vidyarthi planted the seeds of Dayanand Anglo Vedic(DAV) institutions, others like Swami Shardhand initiated work for setting up of Gurukuls and Arya schools, both for girls and boys.

Today, there are about 2000 DAV and Arya institutions in the country where millions of boys and girls are taking education with a tinge of Vedic values. This is a true tribute to this selfless Sanyasi about whom Rishi Aurbindo had said, “I see many great men sitting on various mountains of the Himalyas, but the mountain on which Maharishi Dayanand Saraswati is sitting is the highest.”

A befitting tribute to a man who led the Indian renaissance!

Was Published in the Hindustan Times

9217970381

भारतिय वर्ण व्यवस्था जन्म आधारित न होकर योग्यतमा पर आधारित थीं

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र – ये समाज के चार आधार हैं। इनमें कोई छोटा बड़ा नहीं। ये चारों ही मनुष्य समाज के उपयोगी अंग हैं। इनमें कोई भी अनुपयोगी नहीं है। किसी एक के बिना समाज का काम नहीं चल सकता। ये चारों वर्ण ही समान हैं। यह कहना कि ब्राह्मण का पहला स्थान है, क्षत्रिय का दूसरा, वैश्य का तीसरा और शूद्र का चौथा स्थान है – समाज में व्यापक भेद–भाव को जन्म देता है। वैदिक वर्ण व्यवस्था में घृणा का कोई स्थान नहीं है।

जैसे सिर, भुजा, उदर और पांव में से एक के बिना भी शरीर अपना निर्वाह नहीं कर सकता, वैसे ही किसी भी एक वर्ण के बिना मनुष्य समाज भी नहीं चल सकता। यदि पाँव में काँटा चुभता है तो आँखों से आँसू निकलते हैं। हाथ उसे निकालने के लिए प्रयत्न करते हैं। यही स्थिति समाज के चारों वर्णों की होनी चाहिये। परस्पर भाईचारे के बिना मानव–समाज का कल्याण नहीं हो सकता। फिर भारत जैसे देश में, जहां सृष्टि के कण–कण में ब्रह्म को व्याप्त माना जाता है, वहाँ शूद्र वर्ण से घृणा करना तो और भी लज्जास्पद है। इस दिशा में हमें पाश्चात्य देशों के निवासियों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। श्रीराम और श्रीकृष्ण को शूद्र भी अपना पूर्वज मानते हैं, गो की मर्यादा का पालन करते हैं और हमारे

ब्हुत से काम जो हमारे जीवन–निर्वाह के लिए आवश्यक है, जो हम स्वयं नहीं कर सकते½ करते हैं। जो हमारे ही समाज का अंग हैं, उन्हीं को हम घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यह मानव समाज और हिन्दू समाज के प्रति घोर अपराध है। यह धारणा वेद–मर्यादा के विपरित है। वेद का आदेश है–

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वावृधुः सौभगाय।

युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ।। ¼ऋग्वेद

तुम में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है, ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए मिलकर बढ़ो। जीवों के लिए सुन्दर कर्म करने वाला, दुष्टों को रुलाने वाला, सदा एकरस रहने वाला परमात्मा तुम्हारा पिता है और उत्तम पदार्थों को देने वाली तथा सुख देने वाली प्रकृति है इस मन्त्र में सब मनुष्यों को समानता का उपदेश दिया गया है। ऐसे श्रेष्ठ उपदेश के होते हुए भी मनुष्य क अपनी ही जाति के मनुष्यों से घृणा करना घोर अपराध और महापाप है।

वर्ण-परिवर्तन

शास्त्रों में वर्ण–परिवर्तन का विधान भी किया गया है। यदि कोई व्यक्ति अपने वर्णोचित गुणों का पालन नहीं करता तो वह अपने वर्ण से गिर जाता है। यदि कोई शूद्र गुण, कर्म और स्वभाव के कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बन सकता है, तो उसे उस वर्ण की दीक्षा दी जातहै। मनु महाराज ने कहा है–

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद् वैश्यात् तथैव च।।

अर्थ– शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो जाता है और ब्राह्मण शूद्रत्व को। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य को भी जानो।

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।
अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।

अर्थ- धर्म का अच्छा आचरण करने से छोटा वर्ण बड़े वर्ण को प्राप्त होता है और अधर्म का आचरण करने से बड़ा वर्ण छोटे वर्ण को प्राप्त होता है। प्राचीन भारत में गुण, कर्म, स्वभाव के बदलने पर व्यक्ति का वर्ण बदल जाया करता था। विश्वामित्र ने क्षत्रिय होते हुए भी अपने तप के प्रभाव से ब्राह्मण पदवी को प्राप्त किया। जब विश्वामित्र राजा दशरथ के दरबार में आये तो महाराजा दशरथ ने उन्हें विप्रेन्द्र अर्थात् ब्राह्मण श्रेष्ठ कहा कि पहले आप क्षत्रिय थे और अब ब्राह्मण हो गये हैं।

जाबाली के पुत्र सत्यकाम ने अपनी माता से कहा– 'माँ! मैं ब्रह्मचर्य आश्रम ग्रहण करना चाहता हूं। मुझे गोत्र का परिचय बतला दो।' इस पर जाबाली ने कहा, 'प्यारे, मैं यह नहीं जानती कि तू किस गोत्र वाला है। मैंने अनेक स्थानों पर काम करने वाली नौकरानी ने यौवन में तुझे पाया। इस कारण तू किस गोत्र वाला है, यह मैं नहीं जानती।'

सत्यकाम गौतम हारिद्रुमत के पास गया और बोला, 'आर्य! मैं ब्रह्मचारी बनना चाहता हूं। क्याआपकी शरण में आ सकता हूं?' हारिद्रुमत ने पूछा कि 'वत्स! किस गोत्र में जन्म लिया है?'उसने उत्तर दिया, 'आर्य! मैं किस कुल का हूं, यह मैं नहीं जानता। मैंने अपनी माता से पूछा तो उसने कहा– यौवन में सबकी सेवा करते हुए तू प्राप्त हुआ था।

तू गुरुजी को जाबाल सत्यकाम बता देना।' हारिद्रुमत ने कहा, 'सच्चे ब्राह्मण को छोड़करदूसरा कोई इस तरह अपने गुप्त भेद को नहीं बता सकता। जाओ, कुशा लाओ, मैं तुम्हें दीक्षा दूंगा।'

वीतहव्य क्षत्रिय राजा थे। उन्होंने क्षत्रियत्व छोड़कर ब्राह्मणत्व को ग्रहण किया। वशिष्ठ वेश्या के पुत्र थे। मुनिश्रेष्ठ मंदपाल नाविका के पुत्र कहे जाते हैं। वेदव्यास मल्लाह की पुत्री से तथा पाराशर श्वपाकी के पेट से उत्पन्न हुए। ये सब तप के कारण ब्राह्मणपद को प्राप्त हुए। नाभाग क्षत्रिय थे, फिर ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए।

उपर्युक्त उदाहरणों से उदाहरणों से पता चलता है कि प्राचीन भारत में वर्ण–व्यवस्था गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर निश्चित की जाती थी।

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।

हिरण्यमयेनप पात्रेण सत्यस्यापितमं मुख्यम
तत्व पूषन्नपावृणु सत्यथमार्य दृष्टये

उस परम स्त्य ब्रहम के दर्शन तभी होंगे जब कि व्यक्ति की आंखों के आगे से धन दौलत का संसारिक सुवर्णमय आवरण हट जायेगा। हम माया के इस आवरण को हटा नहीं पाते इसलिये परम सत्य ब्रहम के दर्शन नहीं कर पाते हैं जो कि मानव जीवन का लक्ष्य है।

घर के अंदर ही नहीं घर के आसपास भी बहुत ज़रूरी है प्रकाश

सीताराम गुप्ता

यदि हमारे आसपास के लोग सुखी–समृद्ध हैं तो इससे देर–सवेर न केवल हम स्वयं सुखी और समृद्ध हो जाते हैं अपितु सुरक्षित भी हो जाते हैं। यदि हम भूखे–नंगे, चोर–उचक्के, अभावग्रस्त व अज्ञानी लोगों के बीच में हैं तो किसी भी तरह से सुरक्षित नहीं हो सकते। ऐसे समाज में अपनी समृद्धि का प्रदर्षन तो दूर ऐसे लोगों के बीच सामान्य जीवन व्यतीत करना भी असंभव हो जाता है।

दीपावली पर हम सभी अपने–अपने घरों को रोशन करते हैं। घरों को ही नहीं राशन नहीं करते अपितु अपने आसपास को भी प्रकाशित करने का प्रयास करते हैं। दीपक ऐसे रखे जाते हैं कि चारों तरफ़ प्रकाश फैल सके। घरों के साथ–साथ उन सार्वजनिक स्थानों पर भी एक–एक दीपक रख आते हैं जहाँ प्रकाश करने वाला कोई नहीं होता। एक दीपक गली के सूने कोने पर तो एक दीपक चौपाल के चबूतरे पर। अब यदि घर के भीतर दीपक प्रज्वलित करना भूल भी गए तो कोई बात नहीं। चारों तरफ प्रकाश है तो सही। चारों तरफ प्रकाश है तो अँधेरा घर के अंदर कैसे रह सकेगा? हमारे यहाँ बिजली–पानी की कोई समस्या नहीं है। कभी–कभार छठे–चौमासे एक–आध घंटे के लिए बत्ती गुल हो भी गई तो क्या फ़र्क़ पड़ता है? एक दिन बिजली चली जाती है। मुझे लगता है बिजली का चले जाना भी अकारण नहीं था।

बिजली के चले जाने में भी कोई संदश निहित था। बिजली चली जाती है और चारों ओर गहन अंधकार व्याप्त हो जाता है। मैं इमरजेंसी लाइट जला लेता हूँ और अपने काम में लग जाता हूँ। तभी कहीं से एक दैत्याकार मच्छर कमरे में घुस आता है और कभी लाइट पर व कभी मुझ पर प्रहार करने लगता है। मैं मच्छर को बाहर करने की कोषिष करता हूँ पर सब बेकार। मैं अपना काम छोड़कर उत्पन्न स्थिति पर विचार करने लगता हूँ तो पाता हूँ कि यह सब स्वाभाविक ही है। कीट–पतंग रोषनी की ओर आकर्शित होंगे ही। स्वाभाविक है कि इन कीट–पतंगों में कुछ डंक मारने वाले विशाक्त कीड़े भी होते हैं। यदि सब जगह प्रकाश होगा तो वे चारों ओर बिखर जाएँगे अन्यथा जहाँ प्रकाश होगा सब वहीं एकत्र हो जाएँगे। घातक हो जाता है प्रकाश भी अगर वह एक ही स्थान पर घनीभूत हो जाए। सब उसी की ओर दौड़ेंगे। उस दौड़ में कितने कुचले जाएँगे, कितने नश्ट हो जाएँगे पता भी नहीं चलेगा।

'अज्ञेय' की एक कविता 'घर' याद आती है। ''घर / मेरा कोई है नहीं / घर मुझे चाहिये / घर के भीतर प्रकाश हो / इसकी मुझे चिंता नहीं / प्रकाश के घेरे के भीतर मेरा घर हो– / इसकी मुझे तलाश है।'' लेकिन व्यक्ति और समाज की स्थिति यह है कि हम सब अपने घर के भीतर प्रकाश चाहते हैं। स्वयं का उत्थान चाहते हैं। केवल अपनी समृद्धि के लिए

प्रयास करते हैं। लेकिन क्या ये संभव है? संभव हो भी तो क्या श्रेयस्कर है? शायद नहीं। केवल एक स्थान पर प्रकाश, उन्नति अथवा समृद्धि हो यह संभव तो है लेकिन ऐसी स्थिति में अंधकार से ग्रस्त अथवा अभावपीड़ित व्यक्ति रूपी मच्छर हमारे घर में घुस आएँगे और हमारा जीना दुष्वार हो जाएगा।

सबको प्रकाश की तलाश होती है। वेदों में भी यही ध्वनि प्रतिध्वनित होती है कि असतो मा सद्गमय/तमसो मा ज्योतिर्गमय/ मृत्योर्माऽमृतंगमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् मुझे अंधकार से प्रकाष की ओर ले चल। प्रकाष, सत्य और अमरता इन्हीं की कामना की गई है। ठीक भी है क्योंकि ये सभी शाष्वत सकारात्मक जीवन मूल्य हैं। शाष्वत सकारात्मक जीवन मूल्यों के अभाव में जीवन में प्रसन्नता, ख़ुशी अथवा आनंद असंभव है। लेकिन क्या मात्र हमारे घर में, मात्र हमारे जीवन में प्रसन्नता, ख़शी अथवा आनंद का स्थाई निवास संभव है? क्या यह संभव है कि हमारे चारों ओर तो दुख–दर्द, अभाव व दरिद्रता, अज्ञान व अशिक्षा, अंधविष्वास व अंधकार और असत्य का साम्राज्य व्याप्त हो लेकिन हम प्रसन्न, सुरक्षित व संतुश्ट, ज्ञानवान व षिक्षित तथा ईमानदार व सत्यनिश्ठ बने रहें?

मान लीजिए हम स्वयं तो रोशनी में हैं लेकिन हमारे चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा व्याप्त है तो क्या ऐसे में हमारा सर्वत्र प्रकाशित बने रहना संभव हैं? जैसे ही हम अपने प्रकाश के घेरे से बाहर निकलने का प्रयास करते हैं हमें चारों तरफ व्याप्त अँधकार डसने को दौड़ता है। हम पुनः अपने प्रकाश के घेरे की ओर दौड़ लगाने को विवश हो जाते हैं। इस प्रकार केवल स्वयं प्रकाशित होकर भी हम एक अत्यंत संकुचित दायरे अथवा घेरे में क़ैद रहने को अभिशप्त हो जाते हैं। कवि ठीक ही कहता है जब वह प्रकाश के घेरे के भीतर बने घर की तलाश की कामना करता है। वास्तव में हमारे पास का प्रकाश उतना महत्त्व नहीं रखता जितना हमारे आसपास का प्रकाष। हम अपना घर कितना ही सुंदर, सुदृढ़ अथवा अभेद्य बना लें, उसे सुवासित कर लें लेकिन यदि आसपास का परिवेष प्रदूशित है तो हमारे सुंदर, सुदृढ़ व अभेद्य घर पर उसका दुश्प्रभाव भी अवश्य ही पड़ेगा। हमारा स्वास्थ्य भी वैसा ही होगा जैसा आसपास रहने वाले अन्य लोगों का होगा।

यदि हमारे आसपास प्रकाश होगा तो यह स्वाभाविक ही है कि उस प्रकाश का लाभ हमें भी मिल जाएगा। चाँदनी रात में ही नहीं, अँधेरी रात में तारों भरे आकाश का प्रकाश भी कितना सुकून, कितना आनंद देता है यह बताने की आवश्यकता नहीं। कभी अँधेरे में खड़े होकर आसपास की रोशनी को निहारने का प्रयास तो कीजिए, अवश्य आनंद आएगा। रजत पट पर फिल्म का सही मज़ा तभी आता है जब सिनेमा हॉल की सारी बत्तियाँ बुझा दी जाती हैं। तभी पर्दे पर चल रही फिल्म अधिकाधिक स्पश्ट होकर हमें पूर्ण आनंद प्रदान करने में सक्षम होती है। हमारा पूरा ध्यान रजत पट पर केंद्रित हो जाता है। ऐसे ही जीवन में बाहरी प्रकाश की उपेक्षा किसी भी तरह से उचित नहीं। जिसने अपने आसपास के प्रकाश से आनंदित होना नहीं सीखा अपूर्ण है उसकी शिक्षा, अधूरा है उसका ज्ञान और सुरक्षा तो बिलकुल भी संभव नहीं। प्रकाश की सर्वव्यापकता ही हमें वास्तविक आनंद प्रदान करती है इसमें संदेह नहीं।

प्रकाश का एक अर्थ नहीं। प्रकाश के भी अनेकानेक निहितार्थ हैं। प्रकाश तो प्रतीक है। प्रकाश मात्र उजाले का नहीं, प्रकाश प्रतीक है ख़ुशी का, आनंद का, समृद्धि का, ज्ञान का, विद्वता का। यदि हमारे आसपास ख़ुशी, आनंद, समृद्धि, ज्ञान और विद्वता का भंडार है तो क्या उससे हमें कोई नुक़सान होगा? कदापि नहीं। यदि हमारे आसपास के लोग सुखी–समृद्ध हैं तो इससे देर–सवेर न केवल हम स्वयं सुखी और समृद्ध हो जाते हैं अपितु सुरक्षित भी हो जाते हैं। यदि हम भूखे–नंगे, चोर–उचक्के, अभावग्रस्त व अज्ञानी लोगों के बीच हैं तो किसी भी तरह से सुरक्षित नहीं हो सकते। ऐसे समाज में अपनी समृद्धि का प्रदर्शन तो दूर ऐसे लोगों के बीच सामान्य जीवन व्यतीत करना भी असंभव हो जाता है। यदि हमारे मित्र और रिश्तेदार अच्छी हैसियत के मालिक हैं तो हम जैसा सुखी इंसान नहीं। वे बेशक हमें अपनी समृद्धि में शरीक न करें लेकिन हमें कश्ट तो नहीं देंगे। यदि हम सकारात्मक सोच से युक्त हैं तो हम उनसे न केवल प्रेरणा और प्रोत्साहन लेकर स्वयं भी आगे बढ़ सकते हैं अपितु परोक्ष रूप से अन्य प्रकार से भी लाभांवित हो सकते हैं।

अब ज्ञान और विद्वता को लीजिए। ज्ञान का प्रकाश तो सर्वोत्तम प्रकाश माना जाता है। ज्ञान के प्रकाश में ही हम जीवन जीने की वास्तविक कला सीख पाते हैं। यदि हम चारों तरफ से ज्ञान के प्रकाश के घेरे से घिरे हैं तो उस प्रकाश की कुछ न कुछ किरणें हमारे अंतर को भी अवश्य ही स्पर्ष करेंगी। किसी भी विद्यालय अथवा विष्वविद्यालय में स्थानीय विद्यार्थियों की संख्या बाहर से आने वाले विद्यार्थियों से प्रायः अधिक ही रहती है। हम ज्ञान के भंडार के निकट अथवा ज्ञान के घेरे के अंदर रह कर ज्ञान से सर्वथा वंचित रह जाएँ यह तो असंभव ही है ना? हम स्वयं ज्ञानवान नहीं हो पाते तो भी कोई बात नहीं। इससे हमें अपनी अल्पज्ञता का तो पता चलेगा ही और अपनी अल्पज्ञ होने की स्वीकृति कम से कम हमें अहंकारी होने से तो बचा ही लेगी। अहंकार से बच जाएँगे तो अहंकारजन्य अन्य अनेक विकारों से भी बचे रह सकेंगे। लेकिन शर्त वही है कि हमारे चारों ओर विद्यमान हो प्रकाश का घेरा।

जो लोग दूसरों की सुख–समृद्धि में आनंद पाते हैं वे लोग उन लोगों से बहुत अच्छे हैं जिन्हें दूसरों की सुख–समृद्धि से ईर्ष्या होती है। ईर्ष्या तो हमारे विवेक को ऐसा नश्ट करती है कि हम स्वयं अपने उद्धार से विमुख होने लगते हैं। सीधी सी बात है यदि समाज में सुख–समृद्धि का स्तर बढ़ता है तो सारा समाज लाभांवित होता है। हम स्वयं भी उस लाभ से वंचित नहीं रहेंगे, यह भी निश्चित है। हमारे घर में न सही यदि हमारे पड़ोस में, हमारे नगर में, हमारे दशष में किसी का नाम होता है तो इससे भी हमारी पहचान विकसित होती है। यदि हमारे घर के भीतर प्रकाष है तो और भी अच्छी बात है लेकिन अपने परिवेष के प्रकाश की चिंता न करना चिंतनीय है। अपने घर के भीतर के प्रकाष को विस्तार दीजिए। इसे निरंतर विस्तार पा रहे एक वृहद् वलय में परिवर्तित कर दीजिए। आपका घर न केवल और अधिक सुंदर व प्रकाषित हो सकेगा अपितु अधिकाधिक सुदृढ़ व सुरक्षित भी बना रहेगा।

क्षमा करना एक गहना है,

क्षमा करना एक गहना है, यह सबका कहना है,
सब ने इस को माना है, यह एक सुन्दर गहना है,
बापू ने भी यही कहा है, क्षमा करना शक्तिशाली का गहना है,
क्षमा करना एक फूल से सीखो जो मसलने वाले को भी खश्बू देता है,
या फिर पेड़ से सीखो, जो काटने वाले को भी छाया देता है,
या फिर मेहंदी से सीखो, जो पिस कर भी रंग देती है,
जिस में क्षमा करने की भावना है, वह ही इंसान कहलाता है
अनजाने मे हर इन्सान से गल्ती होती है, पर क्षमा करने वाले की अलग ही हस्ती होती है,
कर भला, हो भला, क्षमा कर, सन्तोष कर, यह कहना है, क्षमा करने वालों का,
क्षमा करने वाले की शान से बढ़कर,
किसी और की शान नहीं,
इसमे सब का हित है,
ऐक इन्सान का अभिमान नहीं,
उतम कर्म है क्षमा करना,
मिल जुल कर रहना सीखो,
क्षमा करने वाले के गुण,
अपने मे समेटना सीखो,
क्षमा करने से सब की कड़वाहट दूर होती है,
आपस मे प्यार ब़ढता है, प्यार की ज्योति जलती है।

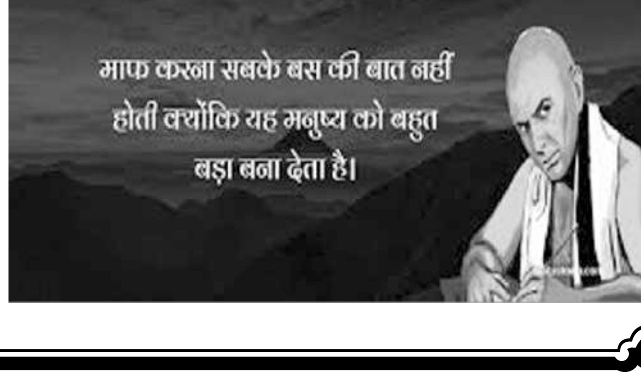

उपनिषदों के महत्त्वपूर्ण उपदेश

कृष्णचन्द्र गर्ग

केन उपनिषद -

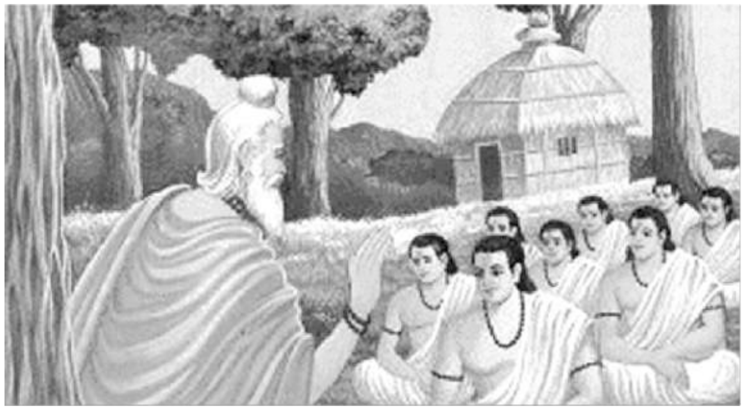

मनुष्य में देखने, बोलने और सुनने की शक्ति ईश्वर ने ही दी है। ईश्वर की दी हुई शक्ति से मन विचारने लगता है। जन्म के समय जब प्राण पहली बार चलने लगते हैं वह ईश्वर की प्रेरणा से ही होता है।

ईश्वर का आदेश – उसका बखान तो ऐसे है जैसे आसमानी बिजली चमकती है और छिप जाती है। इस चमकने के थोड़े समय में आप कुछ देख लें। ऐसे ही ईश्वर विशेष परिस्थितियों में कुछ क्षण के लिए मन में एक विचार देता है। कोई कोई उसे पकड़ लेता है। यह ऐसे ही है जैसे आँख खुले और झपकी मारे और इस बीच कुछ देख जाए।

यह मन हर क्षण या तो बीते हुए को याद करता है या आगे के लिए नए विचार करता है।

कठ उपनिषद -

श्रेय (कल्याणकारी) तथा प्रेय (प्रिय लगने वाला) – ये दोनों भावनाएं मनुष्य के सामने आती हैं। धीर पुरुष इन दोनों की भली प्रकार मन से सोचकर परीक्षा करता है, छान–बीन करता है। वह प्रेय की अपेक्षा श्रेय को ही चुनता है। धीर पुरुष वह है जो कोई काम जल्दी में नहीं करता, तत्काल फल नहीं देखता। मन्द–बुद्धि व्यक्ति सुख चैन के लिए, आराम से जीवन बिताने के लिए प्रेय को चुनता है।

जो व्यक्ति दुराचारी है, अशान्त है, चनचल चित्त वाला है, जिसकी विचार शक्ति स्थिर नहीं है, वह परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता। परमात्मा को शुद्ध ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

शरीर एक रथ है, आत्मा रथी अर्थात रथ का मालिक है, बुद्धि सारथी है, मन लगाम है। इन्द्रियां घोड़े हैं, इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रियां रूपी घोड़े दौड़ते हैं।

आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा को पसन्द है सिरफ इस कारण से ही कार्य नहीं किया जाना चाहिए। अपितु बुद्धि से विचार कर ही कार्य किया जाना चाहिए।

सारे ब्रह्माण्ड मं एक शक्ति ही काम कर रही है – वह है ब्रह्म की शक्ति। जो व्यक्ति यह समझता है कि यहां कोई और शक्ति है और वहां कोई और, वह अज्ञान–अंधकार में है।

मनुष्य का जैसा ज्ञान और कर्म होता है उसके अनुसार ही उसे अगली योनि मिलती है।

यह संसार स्वतन्त्र नहीं है, किसी के वश में है। संसार को वश में करने वाला वही एक परमेश्वर है। सब प्राणियों के आत्मा में उसका वास है। आत्मा में बैठे उस ब्रह्म को जो धीर पुरुष देख लेते हैं वे पाप कर्म नहीं करते और सुखी रहते हैं।

ईश्वर कुछ कुछ तो सभी को भासता है। हां कभी–कभी उसका विशेष भास होने लगता है।

आँख उसे देख नहीं सकती। हाथ उसे पकड़ नहीं सकते। मन को वश में रखने वाले ज्ञानी लोग आँख से और हाथ से नहीं हृदय से और मन से उसे पकड़ पाते हैं।

महिला आरक्षण कानून स्वतन्त्र देश होने के 75 साल बाद क्यों बना पहले क्यों नहीं

राष्टंपति द्रौपदी मुर्मू ने महिला आरक्षण विधेयक को अपनी स्वीकृति दे दी है। इस विधेयक में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। विधि मंत्रालय की अधिसूचना के अनुसार, राष्टंपति ने विधेयक को अपनी स्वीकृति दे दी। इसे अब आधिकारिक तौर पर संविधान 1/4106वां संशोधन1/2 अधिनियम के रूप में जाना जाएगा। आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित केंद्र सरकार की अधिसूचना की तारीख से यह प्रभावी होगा।

सब से पहले प्रश्न यह है कि आरक्षण की आवश्यकता क्यों ? कारण या तो महिलाएं अभी भी आगे नहीं आ रही या पुरूष महिलाओं को आगे नहीं आने दे रहे। मेरे विचार में ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत पिछले एक हजार वर्ष से पुरूष प्रधान समाज रहा। इसका सब से बड़ा कारण था मुगलों का भारत पर लम्बे समय तक राज्य और जिस तरह का ईस्लाम मुगल भारत में लाए उसमें स्त्री का स्थान घर के अन्दर व पर्दे में ही था उसका प्रभाव हिन्दु लोगों पर भी था। वैदिक संस्कृति में चाहे स्त्री का स्थान सब से उंचा था परन्तु जहां तक शासन की बात है उस में साम्राज्यवाद का ही उल्लेख है जिस में कि सदैव राजा कें सब से बड़े पुत्र ने शासन की बागडोर सम्भाली। रामायण से लेकर मुगलों के आने तक यह प्रथा चली रही चाहे बीच मे किसी खास कारण से, कहीं शासन का कार्य स्त्री ने भी किया हो।

लोकतन्त्र का जिकर युनान देश में चौथी सदी में आया है परन्तु उसे लोकतन्त्र नहीं कह सकते क्योंकि उस में स्त्रीयों, दासों व बहुत से दूसरे वर्गो को वोट देने का हक नहीं था। **लोकतन्त्र सही माने में पश्चिम की ही देने है व मुख्य श्रेय इग्लैंड को जाता है जिसने राजा की शक्तियों पर अंकुश लगाने के लिए 1215 में मगनाकार्टा का प्रयोग किया।**

इसलिए भारत में 1947 से पहले स्त्रियों का शासन में हिस्सेदारी न होना स्वभाविक था। 1947 में स्वतन्त्रता के बाद भारत द्वारा लोकतन्त्र को अपनाना व संविधान में समानता व स्वतन्त्रता को मुख्य स्थान देना स्त्रीयों के लिए शासन में हिस्सेदारी का अधिकार देना था ‌। समाजिक प्रथाए एकदम नहीं, परन्तु आहिस्ता आहिस्ता परिर्वतित होती है । इस में भी शिक्षा का अहम रोल होता है। इन्दिरा गांधी, सरोजनी नायडू या बहुत सी दूसरी महिलाएं जो कि विदेशों में पढ़कर या रह कर आई थी उनका महिलाओं के अधिकारों को समझना आसान था, यही कारण है कि वह दूसरी महिलाओं से पहले रातनिती की और आ गई। इसका एक और उदाहरण पनाकिस्तान की बैनजिर भुटटो है। वह मुसलमान होने के बाबजूद पाकिस्तान जैसे ईसलामिक देश में भी प्रधानमन्त्री बन गई।

परन्तु भारत में जिस रफतार से स्त्रीयों में शिक्षा फैली, उस रफतार से स्त्रीयो ने रातनिती में रूची नहीं दिखाई। इसका एक कारण यह है कि भारत का लोकतन्त्र आर्दश लोकतन्त्र न होकर अहुत सी बुराईयों से ग्रस्त हैं। जो राजनितिक दल विशुद्व राजनिती का 1980 तक हवाला देते थे वही दल आज वह सभी हथकंडे अपना रहा है जिसका वह विपक्ष में रहते हुए विरोद्व करता था।ऐसे में स्त्रीयां तो क्या कोई भी शरीफ व्यक्ति आज के समय में राजनिती में कदम रखने से डरता है।

महिला आरक्षण कानून के लिए श्रेय किसी राजनैतिक दल को नहीं परन्तु इस में कुछ नेजाओं के निजी प्रयत्नहैं जिन में राजीव गांधी व सोनिया गांधी का भी नाम है।

Pat Cummins a philosopher cricketer

Bhartendu Sood

The Australian captain Pat Cummins is very rightly in the limelight, being the captain of World cup winning Australian side of 2023. But, not many know that he is a philosopher cricketer and his outlook to life is that of a philosopher.

It was the year 2021, the entire world was in the grip of Covid-19 with thousands dying in India for want of medical Oxygen. IPL was going on and Pat Cummins was playing for the club Kolkata Knight Riders.

On one of these days , the entire media was abuzz with the news---' Australian cricket star has questioned the very rationale of holding IPL when people of the country were undergoing mammoth agony, anxiety and panic and the country had not enough funds to arrange necessary medical facilities like medical oxygen. After a day or so he donated $ 50,000 to go towards medical supplies in India. It is not his act of charity but the message and his appeal to the co-IPL players that reflects on his philosophical part---"I have grown to love the country dearly over the years. To know that so many are suffering so much at this time saddens me greatly. At times like this, it is easy to feel helpless. Initially even I felt helpless but then thought of doing something, it may be a little but that can make a difference to some needy. By our actions only we can put our emotions into work and probably it can make others join us." His appeal had an impact and other IPL players too came forward to contribute for the cause aimed at lessening the suffering of others.

Coming to this world cup, on the eve of the final match of the much awaited event, when the media asked about his plans for the next day's game. He summed up in a few words that conveyed many things. "I want to see the huge crowd getting silenced." First thing that he conveyed was about the peculiar crowd behaviour in India that irritates the visiting sides. Cricket lovers create a sea of humanity in the stadium but only to cheer and back up India with a heavy dose of jingoism. They have no heart to admire the good performances coming from other sides.

Second, it conveyed the hidden resolve of his team to keep India under pressure and win the coveted trophy. Both these things really happened. The crowd which was on their feet with deafening applause and noise in India's match against its arch rival Pakistan, was sullen with anxiety & pain on their faces and prayer on their lips, as soon as Australia looked in the invincible position and Australia carried the trophy for the 6th time.

Despite being a fast bowler, his performances gave enough hints that he is a cricketer who thinks, plans and then acts according to the situation . A player who hit 39 in 13 balls in a league match against England, played 68 balls to score 12 runs when Maxwell was on fire to save the crucial match against Afghanistan. Much against the conventional wisdom, His decision to field after winning the toss was also backed up by loud thinking as he explained later.

Lastly, he always wore an infectious smile on the field irrespective of the position of Aussies in the match. Never was seen angry even when catches were dropped at the crucial juncture. Such equanimity is the forte of thinkers as they had come to know winning or losing is a part of the game. Important in life is to play the spirit of the game.

छात्र जीवन में अध्यात्म

विशाल सोनी

जब भी 'छात्र जीवन में अध्यात्म' की बात होती हैं, तो सबसे पहले यही प्रश्न उठता इस उम्र में अध्यात्म लेकर ये करेगा क्या? इस उम्र में बैंक में नौकरी, रेलवे में नौकरी चाहिए,डॉक्टर बनेगा, इंजिनियर बनेगा, आईएस बनेगा, आईपीएस बनेगा, ये अध्यात्म लेकर क्या करेगा?

जीवन में अध्यात्म इसीलिए आवश्यक है कि वर्तमान में जहाँ एक तरफ युवाओं के अन्दर तनावबढ़ता हुआ दिख रहा हैं, वहीं दूसरी तरफ मन के भीतर फैलता हुए नकारात्मक विचार हैं। जहाँ चारो तरफ नकारात्मकता दिखाई पड़ती है, जहाँ पिता और पुत्र के बीच प्रेम ख़त्म हो रहा है, भाई– भाई के बीच की एकता कमजोर हो रही है, माँ और बेटे के बीच प्यार घटता जा रहा हैं, मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु बन चुका हैं।

जब वातावरण में इतनी सारी नकारात्मकता फैली हुई हैं, तो व्यक्ति के पास सिर्फएक ही मार्ग बच जाता है कि अपने आपको सही दिशा में ले जाये और वह मार्ग है अध्यात्म'। इसी मार्ग से जाकर इसान, इंसानियत को पा सकता हैं, और मानव मानवता को पा सकता हैं।छात्र जीवन में अध्यात्म इसलिए आवश्यक हैं कि जब बीज वृक्ष बनेगा और वृक्ष सही नहीं बनेगा,तो इसमें फल भी सही नहीं लगेगा। छात्रों की भाषा में कहें तो छात्र जीवन में अध्यात्म इसलिए चाहिएकि वह हमें अन्धकार से प्रकाश की और ले चले। युवा की भाषा में कहे तो उसकी जवानी को जो सही दिशा देता है वही अध्यात्म है।

आजकल शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी सफल होना चाहता है– 'व्यक्तित्व परिष्कार साधन',चाहता है कि मेरा व्यक्तित्व बेहतर हो और इंटरव्यू में जाने के लिए इसे रंगा हुआ सियार बनाया जाता है, शिक्षक कुछ प्रश्नों के उत्तर रटवा देते हैं। साक्षात्कारकर्ता के सामने आते ही उसकीव्याकुलता बढ़ जाती है, वह अपने आपको असहज अनुभव करता है। उसकी शारीरिक भाषा से साक्षा–त्कारकर्ता समझ जाता है कि यह रंगा सियार है और वह तुरंत क्रॉस क्वेश्चन पूछता हैं। बहुत से विद्यार्थी छट जाते और

फिर घर आकर रोते है। लेकिन जिसवद्यार्थी के जीवन में अध्यात्म का समावेश होता हैं उसकी आँखों में एक ऐसी चमक होती है कि जब साक्षात्कारकर्ता की आँखों में आँख डालकर अपनी बातों को रखता है, तो वे उस से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते।दुनिया है।

वर्तमान काल में जहाँ छात्र मानसिक रूप से तनाव और डिप्रेसन के शिकार हो जाते हैं, उन्हेंसिर्फ फिजिक्स, केमेस्टी, मैथ, रीजनिंग आदि विषयों का ज्ञान और शिक्षा देकर उनके जीवन को सार्थक नहीं बना सकते। यह फिजिक्स का फार्मूला भौतिक दुनिया और विज्ञान क्षेत्र के समस्या का समाधान कर सकता है, परन्तु जब मनुष्य के जीवन में तनाव, अवसाद, परेशानी आती है, तो सिर्फ अध्यात्म की शिक्षा काम आती है।

यह अध्यातम का ज्ञान प्राप्त तभी हो सकता है जब फिजिक्स, केमेस्टी, मैथ, रीजनिंती और कानून की कितावें पढ़ने के साथ हम हर रोत गीता, वेद व उपपिषद भी पढ़े। सार्फ एक बार न पढ़ें परन्तु पुन पुन पढें। गीता, वेद व उपपिषदों की हर बात जीवन जीने का ढंग बताती है। चाहे आप पाषाण युग में थे या अब कम्पयुटर युग में है, जीवन में सुख शांति व आनन्द के लिए इस ज्ञान की आवश्यकता है। जीवन की बुनियाद दुड़ हो जाएगी यदि माता पिता, धार्मिक पुस्तकों या फिर आर्य समाज जैसे संस्थान से यह शिक्षा मिल जाती है।इस लिए विद्यार्थी काल से ही अध्यात्मवाद के पथ पर अग्रसर हों।

Enlightenment after retirement

Bhartendu Sood

It was my first Diwali after retirement. Lost in thoughts, my mind rolled back to my years working. A week before Diwali, people would start coming in with precious gifts like a diamond necklace and gold jewellery, all of which my wife would swiftly put in her jewellery box. Over the years, it had become so heavy that it would pose problems even to the seasoned burglar. Then, there would be so many electronic gadgets that the room we'd stored them would begin to look like a gift shop. Low value gifts like wristwatches received disdainful glares from my wife and would be kept for presenting to our kin. The quantity of dry fruit would be so large that even after distributing to our relatives and friends, resale would fetch a few thousand.

Today, it was already 2 pm but nobody had come to wish us Diwali. I was feeling downcast and highly depressed with this change of fortune. To free myself from this melancholy, I reached to the spirituality column of one of the newspapers. Fortunately, I found myself engrossed in a small story in that column which read like this: A donkey was carrying idols of gods on his back for an important annual religious puja. When he passed through the villages on the way, villagers bowed to the idols of the gods. In every village, a crowd would throng to pay obeisance.

The donkey started thinking that people were bowing to him and was thrilled with this newfound respect. After leaving the idols at the place of the puja, his master loaded vegetables on him and they started their return journey. This time, nobody was paying any attention to the donkey. The cold-shouldered donkey felt so frustrated that he started braying to invite the attention of villagers - who became irritated with his non-stop braying and started beating him.

All of a sudden, I felt enlightened. Indeed, I was a donkey. All those gifts and overt gestures of respect and obeisance were not meant for me but for the positions I had occupied. Fired by the sudden rush of newly acquired enlightenment, I rushed to my wife and exclaimed, " My dear, I was really a donkey. Now that the truth has dawned on me, I will definitely join you in celebrating Diwali."

But, even now, she was in no mood to spare me: "The problem with you is that when I had been saying that you were a donkey, you did not accept it. But today your newspaper revealed this truth and you accepted it at once. That's why I say that you are wedded to newspapers, not to me," came her reply.

It is a whimsical narrative that delves into the realm of self-awareness beyond professional success. Through the allegorical journey of a donkey mistakenly associating respect for idols with personal admiration, the story cleverly communicates the idea that accolades during one's career are often tied to the positions rather than one's authentic self. Consequently, it suggests that instead of succumbing to despondency, a shift in perspective after retirement is essential. This shift involves embracing tranquillity, savouring freedom from supervisors, and immersing oneself in the pursuit of hobbies and social activities. It advocates allocating time to prioritise health.

क्या भारत का मुख्य हिन्दु धर्म, सत्य सनातन धर्म है ?

भारतेन्दु सूद

तामिलनाडू के मुख्य मन्त्री श्री स्टालिन के बेटे उध्यानिधी सटालिन द्वारा यह कहे जाने पर कि वह उस हिन्दु धर्म को नहीं मानता जिस में कि सत्य सनातन धर्म की जाति प्रथा जैसी बुराईयां हों बहुत बड़ा बबाल खड़ हो गया है और इसका प्रयोग वोट बटोरने की राजनिती के लिए शुरू हो गया है।।

उध्यानिधी सटालिन का यह कथन उसी प्रकार है जिस तरह लगभग 2000 साल पहले महात्मा बुद्व ने कहा था कि मैं उन वेदों को नहीं मानता जिस में यज्ञ में पशु बली , हिन्दु समाज में फैली जाति प्रथा, स्त्री व दलितों को अछूत मानना व शिक्षा का प्रवधान न होना जैसी बुराईयां हों । महात्मा बुद्ध ने यह सब वेदों को पढ़े बिना कह दिया था। उन्होने यह मान लिया कि हिन्दु समाज में धर्म के ठेकेदार जो कुछ भी कर रहें है वह वेदों के अनुसार कर रहें है जब कि सच्चाई यह थी कि हिन्दु समाज में धर्म के ठेकेदारों ने तो वेदों को बहुत पहले से दूर कर दिया था और लोगों के शोषण के लिए हिन्दु धर्म की अपनी परिभाशा बना दी थी।

इसी तरह यह मानना कि भारत में जो हिन्दु धर्म व्यवहार में है वह सत्य सनातन धर्म है, बिन्कुत गलत है। न तो उध्यानिधी सटालिन सही हैं न ही भारत के हिन्दु धर्म के ठेकेदार।

भारत में जो हिन्दु धर्म व्यवहार में है वह सत्य सनातन धर्म नहीं है इसके पक्ष में मैं निम्न तर्क दे रहा हूं ।

1 भारत में जो हिन्दु धर्म व्यवहार में है उस में जाति प्रथा का तो मुख्य स्थान है। इसे हमारी सभी दलों की सरकारें भी मानती हैं, तभी तो नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में आरक्षणे का प्रवधान है। मैं यह नहीं कह रहा कि यह ठीक है या गलत। परन्तु सत्य सनातन धर्म में तो सब मनुष्य बनाबर है। उसका आधार तो मनुष्य है और उसे मानव बननें को कहा गया है। यदि वर्गो में बांटा भी गया है तो उसका आधार जन्म नहीं बल्कि व्यवसाय है। जब कि भारत में जो हिन्दु धर्म व्यवहार में है उस में जाति प्रथा का आधार जन्म है। इसी जन्म आधारित जातिप्रथा को मानकर हमारे गाांवों में अभी भी उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों पर बहुत अत्याचार करते हैं व अमानविय व्यवहार करते है। इसलिए यदि उध्यानिधी सटालिन ऐसे हिन्दु धर्म की भ्रतसना करता है तो गलत नहीं।

2 सत्य सनातन धर्म में ईश्वर एक है जो कि सत चित आनन्द स्वरूप है, न तो उसका आरम्भ है और नही अन्त, अनादि अनन्त और अजन्मा है सर्वव्यापक है

इसलिए यह कहना कि हिन्दु धर्म सत्य सनातन धर्म है ठीक नहीं है । हां वेदों पर अधारित वैदिक धर्म जिसको हम छोड़ चुके हैं और जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य यमाज स्थापित किया, वही सत्य सनातन धर्म है

ईश्वर से प्यार करें, न कि भयभीत हो

भारतेन्दु सूद

कोई अगर आप को कहे कि आपके बच्चे आप से डरते हैं तो आप को कैसा लगेगा? मेरे ख्याल में आप दुखी ही होंगे। और अगर कोई कहे कि आपके बच्चे आप से प्यार करते हैं तो आप खुश ही होंगे। ईश्वर भी हमारा पिता है। इसलिये यह कहना कि मैं ईश्वर से डर कर रहता हूं। I am a God fearing person ठीक नहीं जान पड़ता। मेरे ख्याल में कहने का अभिप्राय होता है कि मैं ईश्वर के न्याय से डरता हुआ कोई बुरा काम करने से डरता हूं।

फिर भी भय और प्यार एक दूसरे से उलट हैं । मनुष्य उसको प्यार नहीं कर सकता जिससे वह डरता है और जिस से वह प्यार करता है उससे डरता नहीं है। एक व्यक्ति से मैं इस बारे में चर्चा कर रहा था तो वह बोला———डर ईश्वर से नहीं उस के क्रोद्ध से लगता है ।यही नहीं बहुत से ईश्वर के क्रोद्धित रूप जिसे रूद्र भगवान भी कहा जाता है उस की पूजा करते हैं। यह तो ईश्वर का और भी अपनान है क्योंकि ईश्वर तो सच्चिदानन्द स्वरूप है और सब अवगुणों से उपर है तभी तो उसे भगवान कहा गया है जब कि क्रोद्ध तो बहुत बड़ा अवगुण है। भय वैसे भी एक नाकारात्मक गुण है न कि साकारात्मक जब कि प्यार एक साकारात्मक गुण है।

गुरूवर रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि मैं ईश्वर से इस लिये बहुत प्यार करता हूं क्योंकि वह उनको भी उतना ही प्यार करता है जो उसकी सत्ता को नहीं मानते। ईश,वर उनको भी जीवन के सब साधन वायु, जल, अग्नि, फल , फूल बनासपति वैसे ही दे रहा है जैसे कि वह उस की सत्ता को मानने वालों को दे रहा है। यह है ईश्वरीय गुण जिये हमें जीवन में अपनाना चाहिये।

जो व्यकित प्यार करता है वह खुलकर उस प्यार को जाहिर भी करता है । अक्सर हम सुनते है——प्यार किया तो डरना क्या ईश्वर भक्ति के गायन, भजन , पाठ , पूता, हवन खुले वातावरण में किये जाते हैं और जो ईश्वर से डरते है वे उसे खु,श करने के लिये कई बार घिनोने कृत भी करते है जैसा कि प्राणियों की मन्दिरों में या पूजा स्थलों मे बलि देते है। एक बार मैं आसाम में घूमने गया था तो वहां मन्दिरों में बलि के प्रचनन को देख कर मैने एक पण्डित से पूछा कि यह बलि क्यों देते हो ———उसका जवाब था———मां के क्रोद्ध को शांत करने के लिये। मैं हैरान था कि उसे कैसे पता लग रहा था कि मां क्रोद्धित है। क्रोद्धित तो वह व्यक्ति होता है जो कि असहाय होता है, ईश्वर तो सर्व सम्पन्न है। फिर मान भी लिया जाये वह किसी एक व्यक्ति से क्रोद्धित है तो वह उसके स्थान पर किसी दूसरे प्राणी, जो कि उसका अपना ही बच्चा है, की जान लेकर कर क्यों शांत होगा। मुझे घूम फिर कर ऐसा लगता है कि इन पण्डितों ने अपने स्वार्थ के लिये सारे हिन्दु समाज का बेड़ा र्गक किया हुआ है और वह ईश्वर को भी नहीं छोडते।

मनुष्य चाहता है कि वह प्यार करे और उसे भी प्यार मिले , तो यही रिश्ता हम ईश्वर से भी रखें। पर ईश्वर एक कदम आगे है वह कहता है न केवल मझे ही प्यार करो पर मेंरे प्राणियों से भी प्यार करो। जब हम ऐसा करने में सफल हो जाते है तो ईश्वर से सच्चा प्यार करने में सफल हो जाते है।

यह भी सच्चाई है कि किसी भी चीज से तभी तक भय रहता है जब तक हम उसे जान नहीं लेते। उदाहरण के लिये हम अन्धेरे में जा रहें है और सामने सांप जैसी कोई चीज नजर आती है। स्वभाविक रूप में हम डर जाते है और वापिस भागने की सोचते है पर यदि पास में टोर्च हो और उस की रोशनी में पता लग जाये किवह तो एक रस्सी थी तो सब भय दूर हो जाता है। इसी तरह ईश्वर से भी तभी तक भय रहता है जब तक हम इश्वर को जान नहीं लेते और अब ईश्वर को जान लेते हैं तो सब भय दूर हो जाता है और सिर्फ ईख्वर के लिये प्यार रह जाता है।

जिन्होने ईश्वर को जाना उन्होने ईश्वर का विवरण ऐसे दिया

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वान्तरयामी व सर्वषक्तिमान, अजन्मा, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्वीकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वश्वर, सर्ववयापक, सर्वानतर्यामी, अजर,अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है

ओइम है जीवन हमारा, ओइम प्राणाधार है,
ओइम है करता विधाता, ओइम पालनहार है।
ओइम है दुख का विनाशक, ओइम सर्वानन्द है।
ओइम है बल तेजधारी, ओइम करूणाकन्द है।
ओइम है पापनाशक ओइम न्यायकारी है।
ओइम है पूज्य हमारा ओइम का पूजन करे,
ओइम के पूजन से मन अपना षुद्ध करें

ऐसे ईश्वर से केवल प्यार हो सकता है, भय नहीं ।इसलिये हमें ईश्वर से प्यार करना है न कि डरना है।

प्यार और विश्वास एक दूसरे के पूरक हैं इस लिये जब हम ईश्वर से प्यार करते हैं तो उस पर पूरा भरोसा भी करें। यही ईश्वर से प्यार है

मनुस्मृति से

अदि्भर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।
महर्षि मनु द्वारा लिखित मनुस्मृति के पाँचवें अध्याय का श्लोक है –

अर्थ – (शुद्ध) पानी से शरीर शुद्ध होता है और मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है।

जो लोग समझते हैं कि किसी नदी या तालाब में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं और जो लोग व्यवहार में झूठ का सहारा लेते हैं उनके लिए महर्षि मनु का यह उपदेश है। सत्य आचरण का अर्थ है जैसा मन में हो वही बोले और उसके अनुसार ही काम करे। झूठ से तो मन मलीन ही होता है।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

MRS ANU CHAUDHARY CELEBRATED BIRTHDAY WITH NGO CHILDREN

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 70 वर्ष

गैस ऐसीडिटी

शिमला का मशहूर कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,
Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

ANITA VERMA

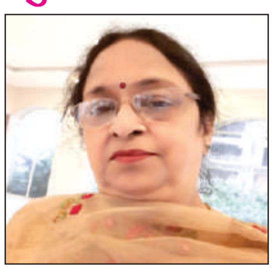

ABHA POPLI

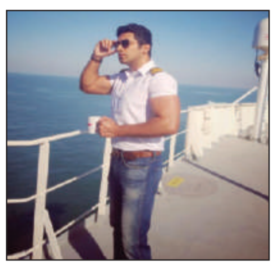

CAPT ASHWIN VERMA

O P NANDWANI

CHITKARA MADAN LAL

JAI DEV AHUJA

JYOTI SHARMA

SWARAN KANTA CHATHLEY

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870